بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 24 जुलाई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(वफ़ा महीने की तिथि 24 ,1406 हश)

जलसा सालाना बर्तानिया 2026 की मुनासबत से रज़ाकारान और मेहमानान ए जलसा को ज़र्रीं नसाएह(स्वर्णिम उपदेश)।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 24.07.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

اَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۔ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ۔

तशहुद, तअव्वुज़, सूरः फ़ातिहा, की तिलावत के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल् अज़ीज़ ने फ़रमायाः अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आज जलसा सालाना बर्तानिया शुरू हो रहा है। मुल्क के कोने-कोने और दुनिया के विभिन्न देशों से मेहमान इसमें शामिल होने के लिए आ रहे हैं या आए हैं। यह सब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के मेहमान हैं, जो ख़ास दीनी मक़सद के लिए यहाँ आ रहे हैं, पस इन मेहमानों की मेहमान नवाज़ी भी ख़ास एज़ाज़ (महत्त्व)रखतीहै।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया के हर मुल्क में जहाँ जलसा सालाना होते हैं, वहाँ के बच्चे, जवान, मर्द और औरतें इस बात का इदराक रखते हैं कि हमने जलसे के मेहमानों की ख़िदमत करनी है और इसके लिए सब अपने आप को रज़ाकार (स्वम सेवक) के तौर पर पेश करते हैं। क़त-ए-नज़र इसके कि अब दुनिया वालों की तरजीहात (प्राथमिकताएं) बदल गई हैं, मुख़लिसीन-ए-जमाअत (जमात के प्रति घोर आस्था रखने वाले) अपने आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत के लिए पेश कर रहे हैं।

ये वे लोग हैं जो इस बात का इदराक (आभास) रखते हैं कि अल्लाह तआला ने मेहमानों की ख़िदमत और इज़्ज़त और तकरीम का हुक्म दिया है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अमल और क़ौल से इस बात की तलक़ीन (आग्रह) फ़रमाई है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इस तरफ़ बार-बार तवज्जो दिलाई है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह और यौम-ए-आख़िरत पर ईमान लाने वाले, मेहमान का जायज़ हक़ अदा करते हैं या अदा करें। निवेदन किया गया कि

जायज़ हक़ क्या है? आप स. ने फ़रमाया कि एक दिन और रात की मेहमान नवाज़ी। और दूसरी जगह यह भी रिवायत मिलती है कि तीन दिन तक उसकी मेहमान नवाज़ी करो।

यह तो ख़ास मेहमानों के लिए है, आम तौर पर जो मेहमान लोगों के घरों में आते हैं, कभी कभी कुछ दिनों के लिए आते हैं। उमूमी तौर पर जब कोई मेहमान आए, तो उसकी मेहमान नवाज़ी करनी चाहिए, यही मुसलमानों को हुक्म है।

आज कल जलसे के दिनों में जो मेहमान आ रहे हैं, ये दूर-दराज़ का सफ़र करके आ रहे हैं, दूसरे मुल्कों से आ रहे हैं। ये तो तीन दिन से ज़्यादा भी ठहरेंगे। जमाअती इंतेज़ाम के तहत ये जितने दिन भी ठहरें, तीन से चार हफ़्तों तक या दो से तीन हफ़्तों तक, जमाअत उनकी मेहमान नवाज़ी करती है। और इसके लिए यह अल्लाह तआला का बड़ा एहसान है कि जमाअत के पास इनकी मेहमान नवाज़ी करने के लिए इतनी बड़ी तादाद में कार्यकर्ता (कारकुन) मौजूद हैं, जो paid कार्यकर्ता नहीं हैं। तीन से चार हफ़्तों तक रज़ाकार अपने आप को इस मक़सद के लिए पेश करते हैं। बल्कि मेहमान नवाज़ी का यहाँ यूके में इतना वसी (व्यापक) निज़ाम हो गया है कि सारा साल ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का लंगर चलता है। क्योंकि यहाँ ख़िलाफ़त मौजूद है और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की मौजूदगी की वजह से लोगों का यहाँ आना-जाना बहुत ज़्यादा है और इसकी वजह से मेहमान नवाज़ी भी करनी पड़ती है। अल्लाह तआला इन सब को जज़ा दे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि मेहमान के जज़्बात बहुत नाज़ुक होते हैं, इसलिए उनका हमेशा ख़याल रखना चाहिए। पस हमें इस बात को भी नहीं भूलना चाहिए कि हमने मेहमानों की हर तरह से ख़िदमत करनी है। अगर हमने अपने आप को पेश किया है, तो फिर अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए इस फ़र्ज़ को अदा करने की हत्तल-मक़दूर (यथाशक्ति) कोशिश भी करनी चाहिए ताकि इस ख़िदमत के बदले में अल्लाह तआला भी हमसे राज़ी हो। और जहाँ तक हो सके हम मसीह-ए-मुहमदी के मेहमानों की ख़िदमत का हक़ अदा कर सकें।

हमारे कारकुनान जो मेहमान नवाज़ी करते हैं या हमारे जलसे के जो इंतेज़ामात होते हैं, इन इंतेज़ामात से बाहर से आए हुए ग़ैर-अज़-जमाअत और ग़ैर-मुस्लिम मेहमान भी बहुत प्रभावित होते हैं। वे यह देखकर हैरान होते हैं कि कार्यकर्ताओं का एक पूरा निज़ाम है जो यहाँ चलाया जा रहा है जिसमें ट्रैफ़िक का निज़ाम भी है, खाना खिलाने का निज़ाम है, सफ़ाई का निज़ाम है, पकाने का निज़ाम है, पानी की सप्लाई का निज़ाम है, ग़रज़ कि बेशुमार निज़ामतें हैं, जिनमें अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के वॉलंटियर्स काम कर रहे हैं। ग़ैर लोग इसे देखकर बहुत प्रभावित होते हैं। यह भी तब्लीग़ का एक माध्यम है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम मेहमानों की किस हद तक ख़िदमत किया करते थे या उनका ख़याल रखवाया करते थे। एक रिवायत में आता है कि आप अलै. मेहमानों का बहुत ख़याल रखते थे। हाफ़िज़ हामिद अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लंगर के मेहमानों का ख़याल रखने के लिए मुक़र्रर किए गए थे, तो आप अलै. उन्हें तवज्जो दिलाते थे कि इन मेहमानों का ख़ास ख़याल रखो। और आम दिनों में मेहमानों की हैसियत के मुताबिक़ उनकी ख़िदमत भी करो।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की मेहमान नवाज़ी के मुतअल्लिक़ बहुतायत वाक़िआत मिलते हैं जो आप अलै. की शफ़क़त, एहसास-ए-ज़िम्मेदारी और मेहमानों के साथ हुस्न-ए-सुलूक का बेहतरीन नमूना पेश करते हैं। हज़रत डॉक्टर हशमतुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जलसा के मौक़े पर जमाअती इजलास में शिरकत की

वजह से वह खाना न खा सके। इजलास ख़त्म होने के बाद जब वह रात गए लंगर ख़ाने पहुंचे तो खाना ख़त्म हो चुका था। सिर्फ़ रोटी का एक टुकड़ा मिला जिसे वे खाने लगे। उसी दौरान दरवाज़े पर दस्तक हुई और आवाज़ दी गई कि अगर कोई मेहमान भूखा रह गया है तो लंगर ख़ाने आकर खाना खा ले। अगले रोज़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रात अल्लाह तआला ने इल्हाम फ़रमाया:يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ أَطْعِمُوا الْجَائِعَ وَالْمُعْتَرَّ (यानी ऐ नबी! भूखे और ज़रूरत मंद को खाना खिलाओ।

इस घटना से मालूम होता है कि अल्लाह तआला अपने मेहमानों की तकलीफ़ का भी एहसास फ़रमाता है, इसलिए जलसे की इंतेज़ामिया को हमेशा इस बात का ख़याल रखना चाहिए कि जो मेहमान सफ़र की वजह से देर से पहुँचें या किसी मजबूरी की बिना पर वक़्त पर खाना न खा सकें, उनके लिए भी मुनासिब और ताज़ा खाने का इंतेज़ाम मौजूद हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया कि मेरे मुरीद चाहे ग़रीब हों या अमीर, सब मेरे नज़दीक बराबर हैं, इसलिए अगर गोश्त और पुलाव पकाया जाए तो सब के लिए हो, और अगर दाल हो तो वह भी सब को यकसाँ (बराबर) दी जाए। इस तालीम से मसावात (समानता), अदल और अख़ुव्वत (बंधुत्व) का आला मयार (उच्च स्तर) क़ायम होता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के तरीक़े थे। आपके असलूब थे। आपकी नसीहत करने के अंदाज़ थे और आपकी मेहमान नवाज़ी के तरीक़े थे।

बहरहाल इस बात का मेहमानों को भी ख़याल रखना चाहिए कि लंगर के इंतेज़ाम के तहत जो खाना पकता है, जो भी मिलता है, इसको सब्र और शुक्र से खा लेना चाहिए। और जब आप यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बुलाने पर आए हैं और इस मक़सद के लिए आए हैं कि हमने यहाँ रूहानी माइदा (दस्तरख़्वान, भोजन) हासिल करना है, तो रूहानी माइदे की तरफ़ ज़्यादा तवज्जो होनी चाहिए, और अगर खाने में कोई कमी-बेशी हो भी जाए तो बर्दाश्त कर लेना चाहिए और मुतालबा नहीं करना चाहिए। इसलिए मेहमान भी इस बात का ख़याल रखें कि इन तीन दिनों में जो भी मिल जाए, उसको सब्र और शुक्र से खा लें और किसी क़िस्म का ऐसा इज़हार न करें कि यह चीज़ हमें पसंद नहीं और हमने नहीं खानी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों को पेश किए जाने वाले खाने के मयार की बाबत एहतियात पर आधारित एक रिवायत पेश करने के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने तलक़ीन फ़रमाई कि खाना पकाने की ड्यूटी वाले जो कारकुन हैं, उन्हें भी एहतियात करनी चाहिए कि इन दिनों में ख़ास तौर पर, आजकल क्योंकि गर्मी का मौसम है, खाने का इंतेज़ाम ऐसा होना चाहिए कि खाना सही तरह महफ़ूज़ रहे और देर तक पड़ा न रहे और ख़ास तौर पर दाल वग़ैरा, जिसमें जल्दी सड़न पैदा हो जाती है, वह देर तक रख कर मेहमानों को न खिलाएँ। इसका ख़याल रखें और पहले खाने को अच्छी तरह चेक कर लिया करें।

हमेशा याद रखें कि जिस नेक मक़सद के लिए आप आए हैं उसी को आपने पूरा करना है, अगर यह नहीं तो फिर कोई फ़ायदा नहीं होगा। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यहाँ नमाज़ों का बाक़ायदा इंतेज़ाम तो है, लेकिन जो लोग लंबा क़ियाम कर रहे हैं, जमाअती क़ियाम गाहों में रह रहे हैं, जलसे के बाद भी उन्होंने नमाज़ों की तरफ़ बाक़ायदा तवज्जो देनी चाहिए और बा-जमाअत नमाज़ पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए।

इन दिनों में जो यहाँ टेंटों में रह रहे हैं या मारकियों में रह रहे हैं, इन सब को चाहिए कि यहाँ तीन दिनों में तहज्जुद भी होती है, तहज्जुद के वक़्त जब उठाया जाए, तो उठना चाहिए, इस तरफ़

ख़ास तवज्जो दें। नमाज़ों की बाक़ायदगी तो है ही, लेकिन तहज्जुद की बाक़ायदगी की भी ख़ास तौर पर कोशिश करनी चाहिए।

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने मौसम की ख़ुश्क़ी के तनाज़ुर में इंफ़िरादी या इजतेमाई क़ियाम गाहों में किसी भी क़िस्म की आग न जलाए जाने की बाबत ताकीद करते हुए फ़रमाया कि हर जगह पर बैठकर किसी भी क़िस्म की चिंगारी से परहेज़ करें, और एहतियात करें कि इसकी वजह से कोई हादसा भी पेश आ सकता है।

सफ़ाई की अहमियत पर ज़ोर देते हुए हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अगरचे (यद्यपि) इंतेज़ामिया ग़ुस्ल ख़ानों, टॉइलेट्स और अन्य बग़ैरा मक़ामात की सफ़ाई का एहतमाम करती है, लेकिन हर मेहमान और हर कारकुन की भी ज़िम्मेदारी है कि इस्तेमाल के बाद सफ़ाई का ख़याल रखे। हदीस-ए-नबवी स. के मुताबिक़ सफ़ाई ईमान का हिस्सा है, और जब जलसा में ईमान बढ़ाने के लिए आए हैं तो सफ़ाई को भी इबादत समझते हुए इसका ख़ास एहतमाम करना चाहिए। इन दिनों में हर शख़्स अपने आप को कारकुन समझे और जहाँ भी ज़रूरत महसूस हो तआवुन (सहयोग) करे।

इसके साथ हुज़ूर-ए-अनवर ने ईमान के मयार बुलंद करने की तरफ़ ख़सूसन तवज्जो दिलाई। फ़ारिग़ औक़ात में ज़िक्र-ए-इलाही, दुरुद शरीफ़, अस्तग़फ़ार और दुआओं में मशग़ूल रहें। ग़ैर-ज़रूरी गुफ़्तगू, फ़ज़ूल मशाग़िल और बे-फ़ायदा बातों से इजतिनाब (परहेज़) करें और दीनी गुफ़्तगू और ज़िक्र-ए-इलाही को अपनी मजालिस का हिस्सा बनाएँ। इसी तरह जलसा में क़ायम की जाने वाली विभिन्न नुमाइशों से भी ज़रूर इस्तिफ़ादा करें। उन्हें महज़ देखने की चीज़ न समझें बल्कि शौक़ और तवज्जो से देखें, क्योंकि उनसे इल्मी, तारीख़ी और दीनी मालूमात हासिल होती हैं और इंसान के ईमान और इल्म में इज़ाफ़ा होता है।

आख़िर में हुज़ूर-ए-अनवर ने दुआ फ़रमाई कि अल्लाह तआला हर शामिल होने वाले को जलसा सालाना की दीनी, रूहानी और इल्मी बरकात से भरपूर हिस्सा अता फ़रमाए, यह बरकात उनकी ज़िंदगियों में हमेशा क़ायम रहें और उनकी आइंदा नस्लों तक मुंतक़िल हों। अल्लाह तआला उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की बिअसत (नियुक्ति) के मक़सद को पूरा करने वाला बनाए। मज़ीद तलक़ीन फ़रमाई कि जलसा के इफ़्तिताही ख़िताब (आरंभिक संबोधन)और दीगर तमाम तक़ारीर को पूरी तवज्जो, ग़ौर और इख़लास से सुनें और उनमें बयान होने वाली नसाइह पर अमल करने की कोशिश करें। अल्लाह तआला सब को इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْ کُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंज़ाब - 18001032131